Smt Dr Tapati Mukerjee
Associate Professor
Music Dept.
Date - 21/05/2020

Study material for B.A Part III (Hons) Paper 5th Theory.

Topic - Naradiya Shiksha
(नारदीय शिक्षा).

नारद द्वारा लिखित "नारदीय शिक्षा संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह नारद पौराणिक नारद नहीं है। नारद नामक कई व्यक्ति अलग-अलग समय में हो आ चुके हैं। इस पुस्तक के रचनाकाल के बारे में संगीत विदों के बीच मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वानो ने इसे चौथी शताब्दी से आठवी शताब्दी के बीच का लिखी हुई ग्रन्थ मानते हैं। कहा जाता है नाट्य शास्त्र के पश्चात तथा यवन आक्रमण के पूर्व का ग्रन्थ है। इसमें हिन्दु संगीत का वर्णन है।

कुछ विद्वानो का मतानुसार नारदीय शिक्षा महर्षि भरत के पूर्व लिखित है क्योंकि इस ग्रन्थ में वैदिक तथा लौकिक दोनो संगीत का वर्णन पाया जाता है। यह ~~[illegible]~~ कहा जाता है संगीत जगत में यह एक अमूल्य ग्रन्थ है।

(a) सर्वप्रथम इस ग्रन्थ में षड्ज, रिषभ, गांधार आदि स्वरों को सा, रे, ग, म प ध नी के रूप में वर्णित किया गया। स्वरों की तीन स्थान बनाया गया है जिनको सम्बन्ध मानव शरीर के अंग से है। उर, कण्ठ तथा शिर अर्थात मन्द्र स्वरों को सम्बन्ध शरीर के उर यानी हृदय से है, मध्य सप्तक के स्वरों को सम्बन्ध कण्ठ से तार तार सप्तक के स्वरों का सम्बन्ध शिर से है।

(b) तत्पश्चात स्वरों की उत्पत्ति वैज्ञानिक ढंग से किया गया है जैसे षड्ज स्वर को निकालने के लिए हमारी नासिका, कण्ठ, हृदय, तालु, जिह्वा तथा दांतों का प्रयोग होता है —

" नासाकण्ठमुरस्तालु जिह्वा दन्ताश्च संश्रित:
षड्जाभि संजायते "

Scanned with CamScanner

(c) इसी प्रकार लय आदि के सम्बन्ध में वृत्ति का वर्णन है। वैदिक उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों से षड्ज, ऋषभ, गांधार आदि सातों स्वरों की उत्पत्ति हुई है। जैसे— उदात्ते निषादगान्धारावनुदात्ते ऋषभ धैवतौ

स्वरित प्रभवा ह्येते षड्जमध्यमपंचमाः ।।

अर्थात् उदात्त स्वर से निषाद तथा गांधार, अनुदात्त स्वर से ऋषभ धैवत तथा स्वरित स्वर से षड्ज मध्यम तथा पंचम स्वर की उत्पत्ति हुई है।

(d) मूर्च्छना आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में पाया जाता है इस ग्रन्थ में नारद ने स्वर मंडल का भी उल्लेख किया है, जिसमें सात स्वर तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छना तथा उनचास तानों का भी वर्णन पाया जाता है,

(e) इस ग्रन्थ में नारद ने तीनों ग्रामों का भी वर्णन किये हैं— षड्ज-ग्राम, मध्यम-ग्राम तथा गांधार ग्राम इन तीनों ग्रामों में दो ग्राम जैसे षड्ज तथा मध्यम का प्रयोग होता है, कहा जाता है कि गान्धर्व लोगों के साथ-साथ गांधार ग्राम भी लुप्त हो गया है,

(f) कहा जाता है कि इस ग्रन्थ में वीणा के अठारह भेदों का वर्णन है। इसी ग्रन्थ के आधार पर ही आगे राग-रागिनी वर्गीकरण किया गया है,

इस प्रकार इस ग्रन्थ में संगीत सम्बन्धित अनेक जानकारियाँ प्राप्त हैं। अतः "नारदीय शिक्षा" संगीत जगत में एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

Scanned with CamScanner